साहित्य अकादमी ने शुरू की वेबलाइन साहित्य श्रृंखला

शिव टाइम्स संवाददाता

जम्मू (मोहन सिंह)। कोरोना वायरस की महामारी के चलते जारी लॉकडाउन के बीच साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने एक अहम कदम उठाते हुए वेबलाइन साहित्य श्रृंखला की शुरुआत की है जिससे घर बैठे ही साहित्यकार अपनी रचनाओं को दुनिया भर के दर्शकों के सामने यू ट्यूब और फेसबुक के माध्यम से प्रस्तुत कर पाएंगे।

इसके बारे में बताते हुए शनिवार को कहानीकार राजेश्वर सिंह राजू ने बताया कि इसी श्रंखला के तहत साहित्य अकादमी की तरफ से वेबलाइन साहित्य श्रंखला के अंतर्गत डोगरी कहानी गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें जम्मू प्रदेश के प्रतिष्ठित कहानीकारों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि अपनी तरह के इस पहले आयोजन में वरिष्ठ कहानीकार राज राही, जगदीप दुबे और उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से यहां एक तरफ सुनने वालों का मनोरंजन किया वहीं उन्हें कुछ ना कुछ सो. चने को मजबूर भी किया।

राज राही ने अपनी कहानी 'नमां टनल' के माध्यम से नंदिनी टनल, जो कि जम्मू–श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर कभी आने– जाने वाले यात्रियों के लिए एक अहम पड़ाव था, उसे आधार बनाया। यहां पर यात्री पकोड़े और राजमाश–चावल वगैरह खाकर आनंद प्राप्त करते, वहीं यहां पर भारी तादाद में रहने वाले बंदरों को भी आहार उपलब्ध हो जाता। नया रूट बनने पर, राही ने वहां रहने वाले बंदरों की वर्तमान दयनीय हालत को मुद्दा बनाया, जो उस

रूट पर गाड़ियों का आवागमन लगभग शून्य हो जाने के कारण भुखमरी का शिकार होकर नये राष्ट्रीय राजमार्ग पर खाने की तलाश में चले आते हैं और तेज रफ्तार चलती गाड़ियों का शिकार बनते हैं।

वहीं, जगदीप दुबे ने अपनी कहानी 'बेकसूर मछलियाँ' के माध्यम से साइंस के दुरुपयोग पर रोशनी डालते हुए विश्व में हथियारों की होड़ को मुद्दा बनाकर सशक्त कहानी की रचना की। यह कहानी सो. चने को मजबूर करती है कि क्या हमें वाकई हथियार चाहिए या मानवता की भलाई के लिए काम किया जाना चाहिए। आजकल कोविड–19 के चलते यह कहानी और भी सार्थक साबित हो गई।

वहीं, प्रसिद्ध पत्रकार, कवि, कहानीकार और अभिनेता राजेश्वर सिंह 'राजू' ने अपनी बहुचर्चित कहानी 'प्रतीक चंद दे प्रतीक' के माध्यम से मातृभाषा डोगरी भाषा का उद्धार करने की आड़ में शोषण को आधार बनाकर बहुत ही सशक्त कहानी की रचना की है। यह कहानी सुनने वालों को उस सच्चाई से अवगत करवाती है जो लगभग हर मातृभाषा भुगत रही है। कहानी मातृभाषा के ठेकेदारों को कटघरे में खड़ा करती है और एक प्रश्न छोड़कर जाती है कि क्या भाषा का प्रसार और विस्तार ऐसे ही लोगों द्वारा संभव है, जिन्हें स्वंय और अपनी संस्था से जुड़े अपने खा़स लोगों के आगे और कुछ नहीं सूझता। कहानी मातृभाषा से प्रेम करने वालों को झिंझोड़ कर रख देती है।

वेबलाइन साहित्य श्रृंखला के अंतर्गत करवाई गई डोगरी कहानी गोष्ठी के सफल आयोजन पर साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के डोगरी भाषा के कन्वीनर दर्शन दर्शी ने बताया की ऐसे ही कार्यक्रम साहित्य अकादमी की तरफ से भविष्य में भी किए जाने की योजना है। जिससे कोरोना वायरस के चलते भी साहित्यिक गतिविधियों को गति प्रदान की जा सके।